वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.२२१

महावीर जन्मभूमि

कुण्डलपुर तीर्थ पूजा

संकलनकर्त्री :

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भगवान महावीर स्वामी के २६००वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के समापन एवं जन्मभूमि कुण्डलपुर विकास के उपलक्ष्य में प्रकाशित

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
(मेरठ) उ.प्र. २५०४०४
फोन नं. (०१२३३) ८०१८४, ८०२३६

प्रथम संस्करण　　१८ अगस्त २००२　　मूल्य १०/-
२२०० प्रतियां　　श्रावण शु. ११

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रन्थों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोतः-
परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

समायोजनः-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

निर्देशनः-
धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी

सम्पादकः-
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

महावीर जन्मभूमि
कुण्डलपुर तीर्थ पूजा

कुण्डलपुर के प्राचीन जिनमंदिर की मूल वेदी

आर्यिका चन्दनामती

आभार

सनावद (म.प्र) निवासी श्री नवल चन्द जैन चौधरी एवं श्रीमती काबुलबाई के सुपुत्र पण्डित श्री कैलाश चन्द्र जैन ने अपने रविव्रत के उद्यापन में **''कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र पूजा''** नामक इस पुस्तक के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग प्रदान किया है।

इनके छोटे भाई श्री सुधीर कुमार जैन एवं उनकी धर्मपनी श्रीमती डिसेन्टबाला तथा श्री ललितकुमार जैन एवं उनकी पत्नी श्रीमती हेमलता जैन एवं भतीजे चि. प्रशान्त जैन एवं चि. मनोज जैन, ये सभी धार्मिक प्रवृत्ति के हैं । सनावद में रहकर सभी सद्‌गृहस्थ के कर्तव्यों का पालन करते हैं।

श्री कैलाश चन्द्र जैन का दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की गतिविधियों में सदैव सहयोग प्राप्त होता रहा है। इस आर्थिक सहयोग हेतु संस्थान उनके प्रति आभारी है।

विषय सूची:-

	पूजा क्रम-	पृ. सं.
१.	नवदेवता पूजन	७
२.	महावीर जिन पूजा	११
३.	महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ पूजा	१७
४.	महावीर पूजा (अंग्रेजी)	२२
५.	महासती चंदना माताजी की पूजन	३०
६.	महावीर स्तुतिः	३५
७.	भगवान महावीर का बारहमासा	३७
८.	भजन	४१
९.	बारहभावना (अंग्रेजी)	४४
१०.	आरती	४७
११.	आरती महावीर स्वामी की	४८

कुण्डलपुर तीर्थ विकास की प्रेरणास्त्रोत

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों! जब इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव दीक्षा लेने के लिए तत्पर हुये थे तब उनके साथ ४ हजार राजाओं ने भी दीक्षा धारण कर ली थी उनमें भगवान ऋषभदेव का पोता मरीचि कुमार भी था जिसने भूख-प्यास की बाधा न सह पाने के कारण अनेक मिथ्यामतों का प्रचार कर दिया पुनः यही मरीचि कुमार अनेक भवों के पश्चात् अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर बन गया।

उन्हीं भगवान महावीर स्वामी का २६०० वां जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष हमने पिछले वर्ष विविध आयोजनों पूर्वक मनाया है, उनके जीवन के प्रत्येक पहलुओं से परिचित होने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी,(जो कि इस पुस्तक की संकलनकर्त्री हैं) पूरी तरह भगवान महावीर स्वामी के जीवन से जन-जन को परिचित कराने में तल्लीन हैं। कहीं ऐसा न हो कि भगवान महावीर के जीवन का कोई पहलू वास्तविकता से हटकर हो, इस बात का वे पूरा ध्यान रखती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में पूज्य आर्यिकाश्री ने कुण्डलपुर के भगवान महावीर की पूजा के साथ-साथ अनेक समसामयिक भजनों की रचना की है। भजनों को पढ़कर तो वास्तव में ''महावीर युग'' की याद आ जाती है हमने भले ही साक्षात् वह युग नहीं देखा है परन्तु इनकी रचनाओं के माध्यम से काफी जानकारियां प्राप्त हो जाती हैं।

भगवान महावीर की पूजा एवं भजनों के माध्यम से आप सभी अपने हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करें, यही मंगल कामना है।

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

प्रस्तावना

ब्र.कु. सारिका जैन (संघस्थ)

जैन शासन के अनुसार भगवान ऋषभदेव की परम्परा में भगवान महावीर स्वामी इस युग के अंतिम एवं चौबीसवें तीर्थंकर हुये हैं, किन्तु कुछ आधुनिक इतिहासकारों को तो जैसे नई-नई शोध करके वास्तविकता से भ्रमित करने में ही बड़ा आनन्द आता है। कुछ समय पहले तक समाज में यह भ्रान्ति व्याप्त थी कि भगवान महावीर जैन धर्म के संस्थापक थे। उन्होंने यह नहीं सोचा कि अगर चौबीसवें तीर्थंकर संस्थापक थे तो उनसे पहले के २३ तीर्थंकरों ने क्या किया? क्या उनके तीर्थंकरों का कोई अस्तित्व ही नहीं था?

सन् १९९३ से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के विविध आयोजनों को सम्पादित करके इस भ्रान्ति का निराकरण किया। उसका परिणाम यह निकला कि आज जैन-जैनेतर सभी को प्रायः यह विश्वास हो गया है कि जैनधर्म को न भगवान ऋषभदेव ने स्थापित किया और न ही महावीर स्वामी ने, अपितु वह तो प्राकृतिक अनादिनिधन है।

पुनः पिछले वर्ष जब जैन समाज पूरी तरह से भगवान महावीर स्वामी का २६००वां जन्म-कल्याणक महोत्सव मनाने में निमग्न था तब कुछ आधुनिक शोधकर्ताओं ने भोली-भाली जनता को भ्रमित करना शुरू कर दिया। २६०० वर्षों से जो जनता कुण्डलपुर को महावीर जन्मभूमि के रूप में पूजती आ रही थी उससे यह कहा जाने लगा कि भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि वैशाली है। इस बात को सुनकर पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने कुण्डलपुर (नालन्दा-बिहार) के विकास का बिगुल बजाया। संघस्थ आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने भी तीर्थ को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से कई प्राचीन आगम ग्रन्थों का आद्योपान्त आलोढन किया तथा कई पुस्तकें लिखकर जैनसमाज को प्रदान कीं जिसको पढ़कर अनेक गणमान्य व्यक्तियों की बुद्धि का शोधन हुआ और उन्होंने कुण्डलपुर को ही वास्तविक **''महावीर-जन्मभूमि''** मानकर अपने जीवन को धन्य किया।

प्रस्तुत पुस्तक की रचयित्री आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी शोधार्थियों को हमेशा यही प्रेरणा प्रदान करती हैं कि **''शोध ऐसी ही करें जिससे वास्तविकता का लोप न होने पाये''**। उनकी प्रेरणा वास्तव में हम सब के लिए अनुकरणीय है। उनके प्रति ये पंक्तियां सार्थक ही हो रही हैं-

शोध करो पर ऐसी नहीं, कि माता भी शंकित हो।
किसी एक की खोजबीन से, सारा देश भ्रमित हो।।
शोध को शुद्ध ही रहने दो, इनने सबको समझाया।
ज्ञान और चारित्र से जिनने जीवन सजाया-हां जीवन सजाया।
ऐसी मात चन्दनामती को, झुक झुक शीश नमाया।।

भ्रान्तियों की इसी श्रृंखला में एक जनश्रुति और भी है, यदि किसी से पूछा जाता है कि भगवान महावीर स्वामी को प्रथम आहार किसने दिया था? तो कौशाम्बी में प्रायः यही सुनने को मिलता है **''सती चन्दना''** ने, परन्तु आप सबको याद रखना है कि प्रथम आहार कूलग्राम के राजा **''कूल''** ने दिया था (कहीं-कहीं राजा का नाम नृपकुमार या वकुल भी आता है)। सती चन्दना ने चूंकि भगवान महावीर को आहारदान देकर बेड़ियों से मुक्ति प्राप्त की थी इसलिए उसे **''ऐतिहासिक आहार''** तो कह सकते हैं परन्तु वह **''प्रथम आहार''** नहीं था।

इसे महज एक संयोग ही मानना पड़ेगा कि आज से २६०० वर्ष पूर्व जब भगवान महावीर स्वामी स्वयं इस धरती पर अवतरित हुये थे तो **''चन्दनासती''** ने उनको आहारदान देकर तथा बाद में उन्हीं के समवसरण में **'प्रमुखगणिनी''** बनकर जगत्पूज्य पद प्राप्त किया था और आज उन्हीं भगवान महावीर स्वामी का शासनकाल चल रहा है तो हमारे और आप सबके जीवन काल में पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की सुशिष्या के रूप में 'चन्दनामती'' जैसी महान आर्यिका माताजी **''प्रज्ञाश्रमणी''** पद प्राप्त करके अपने ज्ञानरूपी आलोक के द्वारा धर्म के वास्तविक स्वरूप से जन-जन को परिचित कराकर एक नया कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं।

महावीर जब स्वयं थे, तब चन्दनासती थीं।
है आज उनका शासन, तो चन्दनामती हैं।।
इतिहास वही फिर से............
इतिहास वही फिर से, दोहराए ये जमाना।
हम सबकी प्रेरिका हैं, ये चन्दनामती मां।।

बन्धुओं! वास्तव में साधु-साध्वी, जो कि चलते-फिरते तीर्थ कहे जाते हैं, इनके द्वारा ही इन अचेतन तीर्थों की गरिमा और सुरक्षा कायम है।

जिस प्रकार हमारा भारत देश जब आजादी की लड़ाई लड़ रहा था तो

सुभाष चन्द्र बोस नामक एक महान व्यक्तित्व ने भारतवासियों को एक शक्तिशाली नारा दिया था-

''तुम हमें खून दो, हम तुम्हें आजादी देंगे''

ठीक उसी प्रकार जब हमारा तीर्थ कुछ अनभिज्ञ लोगों की खोज के कारण विवादों के घेरे में आ गया तो चन्दनामती माताजी ने जैनसमाज को एक स्लोगन दिया-

''तुम हमें सहयोग दो, हम तुम्हें तीरथ देंगे''

इनका ये आह्वान वास्तव में अनुपालन करने योग्य है। अगर हम तीर्थों का संरक्षण, संवर्धन नहीं कर सकते तो हम इनके कहे अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन तो कर ही सकते हैं। अपने धर्म और धर्मायतनों की सुरक्षा की जो भावनाएं इनके हृदय में अंकित हैं उन्हें पूर्णरूपेण तो शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता परन्तु फिर भी कुछ रूप में व्यक्त करने का लघुप्रयास किया जा रहा है-

तर्ज- तेरी दुनिया से दूर......

चलती फिरती तीरथ हैं, जग में फैली कीरत है, ऐसा काम तेरा।
भोली भाली सूरत है, ममता की तू मूरत है, बड़ा नाम तेरा।।
तीर्थों की रक्षा, जिनधर्म की सुरक्षा, ये लक्ष्य है तेरा,
ये लक्ष्य है तेरा-परम लक्ष्य है तेरा।
भूले भटके प्राणि को सन्मार्ग दिखाना ही, शुभ भाव है तेरा,
शुभ भाव है तेरा-यही भाव है तेरा।।
तुम दो हमको सहयोग, फिर लो तीरथ सभी लोग, ये आह्वान तेरा।
चलती फिरती तीरथ.............................।।

अन्त में यही कहना है कि जिन भगवान महावीर स्वामी के शासनकाल में हम और आप सभी जीवनयापन कर रहे हैं, उन भगवान की भक्ति में हम अपना जो कुछ भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से समर्पित कर सकें वह हमारा परम सौभाग्य होगा तथा पुस्तक में प्रकाशित कुण्डलपुर तीर्थ की पूजा, हिन्दी-अंग्रेजी में भजन आदि के माध्यम से भगवान के गुणों का गान करते हुये हम भी अपने जीवन को सुखद और समृद्धिशाली बनाएं, यही मंगल भावना है।

****

नवदेवता पूजन

रचयित्री- गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

गीताछन्द

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं ।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृहवंद्य हैं ।।
नवदेवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें ।
आह्वान कर थापें यहां, मन में अतुल श्रद्धा धरें ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं....अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं ...अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा ।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूं मुदा ।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें ।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता ।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता ।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें ।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें ।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनायचंदनं....।

क्षीरोदधी के फेन सम सित तंदुलों को लाय के ।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ाय के ।। नव.।।३।।

ॐ ह्रीं......अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये ।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये ।।नव.।४।।

ॐ ह्रीं.... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं..... ।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में ।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु, पूजहूँ नत भाल मैं ।। नव.।।५।।

ॐ ह्रीं.....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं..... ।

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक लिया निज हाथ में ।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं ।। नव.।।६।।

ॐ ह्रीं.... मोहांधकारविनाशनाय दीपं..... ।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा ।
निज आत्मगुण सौरभ उठे हों, कर्म सब मुझसे विदा ।। नव.।।७।।

ॐ ह्रीं.....अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में ।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं ।। नव.।।८।।

ॐ ह्रीं ....मोक्षफलप्राप्तये फलं.... ।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले ।।नव.।।९।।

ॐ ह्रीं......अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.......।

दोहा - जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत ।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत ।।१०।।

शांतये शांतिधारा ।

नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय ।
मैं पूजूँ नवदेवता, पुष्पांजली चढ़ाय ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः ।

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।

(९, २७ या १०८ बार)

जयमाला

सोरठा - चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा ।।१।।

चाल - हे दीनबन्धु श्रीपति----

जय जय श्री अरिहंत देव देव हमारे ।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे ।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ ।।२।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं ।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं ।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी ।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी ।।३।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा ।
निज आतमा की साधना से च्युत न हों कदा ।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे ।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें ।।४।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा ।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा ।।
जिन की ध्वनि पियूष का जो पान करेंगे ।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे ।।५।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं ।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं ।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें ।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें ।।६।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें ।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें ।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ ।
सम्पूर्ण "ज्ञानमती" सिद्धि हेतु ही भजूं ।।७।।

दोहा - नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम ।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

गीताछंद

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें ।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें ।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते ।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहां पर कभी न आवते ।।९।।

इत्याशीर्वादः ।

महावीर जिन पूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

अथ स्थापना

(तर्ज-तुमसे लागी लगन...)

आपके श्रीचरण, हम करें नित नमन, शरण दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।। टेक.।।
वीर सन्मति महावीर भगवन्!
आवो आवो यहाँ नाथ ! श्रीमन्!
आप पूजा करें, शुद्ध समकित धरें, शक्ति दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

(तर्ज-चंदन सा वदन....)

शंभु छंद

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
गंगानदि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आये हैं।
भव भव का कलिमल धोने को, श्रद्धा से अति हरषाये हैं।।
हे वीरप्रभो! महावीर प्रभो! त्रयधारा दें तव चरणों में।। त्रि.।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
हरिचंदन कुंकर्म गंध लिये, जिनचरण चढ़ाने आये हैं।

मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो ! चंदन लेकर, चर्चन करते तव चरणों में।। त्रि.।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
क्षीराम्बुधि फेन सदृश उज्ज्वल, अक्षत धोकर ले आये हैं।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।।
हे वीरप्रभो ! हम पुंज चढ़ा, अर्चन करते तव चरणों में।। त्रि.।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
मदनारिजयी तव चरणों में, हम अर्पण करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो ! पुष्पों को ले, पूजा करते तव चरणों में।। त्रि.।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाये हैं।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।।
हे वीरप्रभो ! चरु अर्पण कर, हम नमन करें तव चरणों में।। त्रि.।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञानज्योति निज में भासे।।
हे वीरप्रभो ! तुम आरतिकर, हम नमन करें तव चरणों में।। त्रि.।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटु कर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
हे वीर प्रभो ! हम धूप जला, अर्चन करते ला चरणों में।। त्रि.।। ७।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
एला केला अंगूरों के, गुच्छे अतिसरस मधुर लाये।
परमानंदामृत रखने हित, फल से पूजन कर हर्षाये।।
हे वीर प्रभो ! महावीर प्रभो ! हम नमन करें तव चरणों में।। त्रि.।। ८।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, वर दीप धूप फल लाये हैं।
निजगुण अनंत की प्राप्ति हेतु, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
हे वीर प्रभो ! हम अर्घ्य चढ़ा, कर नमन करें तव चरणों में।। त्रि.।।९।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उपेंद्रवज्रा छंद

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा, श्री सन्मती के पदकंज धारा।
निजस्वांत शांतीहित शांतिधारा, करते मिले हैं भवदधि किनारा।।१०।।

शांतये शांतिधारा

सुरकल्पतरू के वर पुष्प लाऊँ, पुष्पांजलि कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भय को भगाऊँ, शोकादि हर के सब सिद्धि पाऊँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

गीता छन्द

सिद्धार्थ नृप कुंडलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़शुक्ला छठ तिथि, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।१।।
ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं...।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।२।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं...।

मगसिरवदी दशमीतिथि, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभु की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।३।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं...।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी केवलरमा परिणय किया।।
श्रावण वदी एकम तिथि, गौतम मुनी गणधर बनें।
तब दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित तुम्हें।।४।।
ीं वै ाख ुक्लाद म्यां श्रीमहावीरजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं...।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।

निर्वाण लक्ष्मी वरण कर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।५।।

ीं कार्तिककष्णाअमावस्यायां श्रीमहावीरजिननिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं--।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य- ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति चिंतामणी, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुखसंपतिसाकार।।१।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणा...)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर ! महावीर ! वीर ! अतिवीर ! प्रभो !
जय जय गुणसागर वर्धमान ! जय त्रिशलानंदन ! धीर प्रभो !।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थतनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।२।।
जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी क्यारी।।
जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।
सब जात विरोधी जन्तू गण, आपस में मिलकर हरषायें।।३।।
चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।
कंचन छवि देह दिपे सुंदर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।४।।
श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधिज्ञानि, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनरनुत थीं।

श्रावक इक लाख श्राविकायें, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।५।।
प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।
भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्षमार्ग अक्षुण्ण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।६।।
मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजै।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
''सज्ज्ञानमती' निर्वाणश्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।७।।

घत्ता

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिनगुणसंपति दाता।
तुम पद पूजूँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

महावीर की निर्वाण बेला, में भविक शुचि भाव से
निर्वाण लक्ष्मीपति जिनेश्वर, पूजते अति चाव से।।
वे भव्य नर सुर के अतुल, संपत्ति सुख पाते घने।
फिर अन्त में शुचि ''ज्ञानमति'', निर्वाण लक्ष्मीपति बने।।१।।

।। इत्याशीर्वादः।।

महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ पूजा

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

स्थापना (चौबोल छन्द)

महावीर प्रभु जहां जन्म ले, सचमुच बने अजन्मा हैं।
जिस धरती पर त्रिशला मां ने, एक मात्र सुत जनमा है।
उस बिहार की कुण्डलपुर, नगरी को वन्दन करना है।
वन्दन कर उस तीरथ का, हर कण चन्दन ही समझना है।

दोहा-

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
अष्टद्रव्य का थाल ले, पूजा करूँ महान।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छन्द)

जिनवर ने कर्मों की ज्वाला, समता के जल से शांत किया।
भक्तों ने ले जल की धारा, जिनवर का पद प्रक्षाल किया।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जहां प्रभु सन्मति को लखते ही, मुनियों की शंका दूर हुई।
जहां की चंदनसम माटी से, भव की बाधा निर्मूल हुई।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने अक्षय पद पाने का, जिस धरती पर संकल्प लिया।
अक्षत के पुंज चढ़ा मैंने, उन प्रभु अर्चन का यत्न किया।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

महलों का सुख वैभव तज कर, जहाँ वीर बने वैरागी थे।
कर कामदेव पर विजय चले, शिवपथ के वे अनुरागी थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

देवों द्वारा लाया भोजन, महावीर सदा ही खाते थे।
क्षुधरोग विनाशन हेतु तथापी, वे जिन काय तपाते थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत व अवधि त्रयज्ञान सहित, तो वीर प्रभू थे जन्म से ही।
मनपर्ययज्ञान हुआ प्रगटित, प्रभुवर के दीक्षा लेते ही।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुक्ल ध्यान की अग्नी में, कर्मों की धूप जलाते थे।
उनकी सौरभ पाने हेतु, प्रभुपास भक्तगण आते थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर प्रभू ने तप करके, कैवल्य महा फल पाया था।
भक्तों ने इच्छा पूर्ति हेतु, फल प्रभु चरणों में चढ़ाया था।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अष्टकर्म के नाशक प्रभु की, अष्टद्रव्य से पूजन है।
फिर अष्टम वसुधा पाने को, सन्मति से मेरा निवेदन है।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छन्द-

महावीर प्रभु की भक्ति की रसधार जो बही।
उससे मनुज व देवों में सुमति प्रगट हुई।।
निज शांति व शीतल सहज अनुभूति मैं करूँ।
जिनवर का ज्ञान अंश मैं भी निज हृदय भरूँ।।१।।

शांतये शांतिधारा........

निज ज्ञान के पुष्पों को बिखेरा जो प्रभू ने।
उसकी सुगन्ध ग्रहण करली बहुत जनों ने।।
भगवान मुझे यदि तेरे, गुण पुष्प मिल सके।
तो मेरा मोक्षमार्ग बन्द स्वयं खुल सके।।

दिव्य पुष्पांजलिः......

t;ekyk

तर्ज-जरा सामने तो आओ........

जहाँ जन्मे वीर वर्धमान जी, जहां खेले कभी भगवान जी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।

कुण्डलपुर में राजा सर्वारथ, के सुत सिद्धार्थ हुए।
जो वैशाली के नृप चेटक, की पुत्री के नाथ हुए।।
रानी त्रिशला की खुशियां अपार थी, सुन्दरता की वे सरताज थीं।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।१।।

राजहंस से मानसरोवर, जैसे शोभा पाता है।
वैसे ही प्रभु जन्म से जन्म, नगर पावन बन जाता है।।

जय जय होती है प्रभु पितु मात की, इन्द्र गाता है महिमा महान भी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।२।।

प्रान्त बिहार में नालन्दा के, निकट बसा कुण्डलपुर है।
छब्बिससौंवें जन्मोत्सव में, गूंजा ज्ञानमती स्वर है।।
तभी आई घड़ी उत्थान की, होती दर्शन से जनता निहाल भी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।३।।

प्रभु तेरी उस जन्मभूमि का, कण-कण पावन लगता है।
छोटा सा भी उपवन तेरा, नन्दन वन सम लगता है।।
अर्घ्य का लाके इक लघु थाल जी, करूँ अर्पण झुका निजभाल भी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।४।।

इस तीरथ के अर्चन से, आत्मा तीरथ बन सकती है।
इसकी कीरत के कीर्तन से, कीर्ति स्वयं की बढ़ती है।।
करूँ "चन्दनामती" प्रभु आरती, भरूँ मन में सुगुण की भारती।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

शंभु छन्द-

तीर्थंकर प्रभु के गर्भ जन्म, कल्याणक से जो पावन है।
भवदधि से तिरने का मारग, दिखलाता जो मन भावन है।।
उस ही श्रेणी में कुण्डलपुर, तीरथ की अमर कहानी है।
महावीर प्रभू की जन्मभूमि, "चन्दना" स्वयं ही निशानी है।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः

POOJA OF SHRI MAHAVIR SWAMI

Written by-Pragyashramni Aryira Chandnamati

MUSIC- Chandan Sa Badan........

Lord Mahavira, God Ativira,
Shri Vardhaman, Sanmati Veera,
By These five names yor are famous,
Respected Teerthankar Veera.
We came worship to you taking flowers
or pushpanjali Prabho
Invite you, locate to you please!
Come near to me Mahavir Prabho
Reverence you pleasant for all,
venerable Lord Mahavira
Lord Mahavira........

Om hreem Shree Mahavir Jinendra!
Atra avatar avatar Samwaushat ahwananam.
Om hreem Shree Mahavir Jinendra !
Atra tishtha tishtha thah thah sthapanam.
Om hreem Shree Mahavir Jinendra !
Atra Mam sannihito bhav bhav washat sannidhikarnam Sthapanam.

ASHTAK

MUSIC- Nandhishwar Pooja-

Pure water of river Sindhu,
Filled in gold water pot.
We are doing Jaldhar,
On holy feet Veer Nath.
Mahavir is supreme God,
Commendable in universe.
Give me also nirwan,
So I worship you.

***Om hreem Shree Mahavir Jinendray Jalam**......*

Taking the rub Saffron,
I come to near lotus feet.
To get coolness as you,
So worship by Sandal.
Mahavir is supreme God,
Commendable in universe.
Give me also nirwan,
So I worship you.

***Om hreem Shree Mahavir Jinendray Chandanam**...*

Taking bright 'Akshat',
I come near to you.
To gain brightness for me,

So worship by 'Akshat'.
Mahavir is supreme God,
Commendable in universe.
Give me also nirwan,
So I worship you.

***Om hreem Shree Mahavir Jinendray Akshatam**.....*

Many coloured rose flowers,
Offer feet of Vira.
These Scent my soul like you,
So worship by flowers.
Mahavir is supreme God,
Commendable in universe.
Give me also nirwan,
So I worshiop you.

***Om hreem Shree Mahavir Jinendray Pushpam**.....*

Taking many victuals,
homage for Mahavira.
Destroy please my hunger,
I offer this Naivedya.
Mahavir is supreme God,
Commendable in universe.
Give me also nirwan,
So I worship you.

***Om hreem Shree Mahavir Jinendray Naivedyam**...*

By row of lighted lamps,
offering Arti for you.
Please give my life light,
So worship by Deepak.
Mahavir is supreme God,
Vommendable in universe.
Give me also nirwan,
So I worship you.

Om hreem Shree Mahavir Jinendray Deepam......

Taking fragrant incense,
Combustion in front of Veer.
I burn my eight Karmas,
So worship by incense.
Mahavir is supreme God,
Commendable in universe.
Give me also nirwan.
So I worship you.

Om hreem Shree Mahavir Jinendray Dhoopam.......

Taking many seasonal fruits,
To put in Golden pot.
To get that fruit of Gyan
So worship by many fruits,
Mahavir is supreme God,

Commendable in universe.
Give me also nirwan,
So I worship you.

Om hreem Shree Mahavir Jinendray Falam........

Taking eight precious Dravyas,
Placing in silver plate.
I come near Mahavir
For invaluable post.
Mahavir is supreme God,
Commendable in universe.
Give me also nirwan,
So I worship you.

Om hreem Shree Mahavir Jinendray Arghyam....

On holy feet of Mahavir,
I am offering Jaldhar.
Give me peaecful life,
People of my nation.

Shantay Shantidhara

By multi-coloured flowers,
I worship Veera.
Give me flower virtues,
And I offer pushpam.

Divya Pushpanjali

Five Kalyanaka's Arghya

Music......Mahavira Jhoole Palna...........

Followers of Mahavira get very happy life

Get very happy life,They get very happy life,Followers

Garbha Kalyanaka of Veera.

Celebrated in Kundalpur.

Saudharm came from Heaven, at Avharh Shukla Shashthi

Worshippers Garbha Kalyanak
Get very happy life.

Om hreem Aasharh Shukla Shashthi Garbhakalyanaka Praptay Shri Mahavir Jinendray Ayrgham..

Janma Kalyanaka of Veera,

Celebrated at Pandu Shila.

Saudharm Indra then came,

at Chaitra Shukla Trayodashi.

Worshippers Janma Kalyanaka
Get very happy life.

Om hreem Chaitra Shukla Trayodashi Janma Kalyanaka Parptay Shri Mahavir Jinendray Arghyam..

Tap Kalyanak of Veera,

Celebrated by all human.

Laukantik Deva came also,

At Magshir Krishna Dashmi.

Worshippers Tap Kalyanaka,

Get very happy life.

Om hreem Magshir Krishna Dashmi Tap Kalyanaka Praptay Shri Mahavir Jinendray Arghyam....

Gyan Kalyanaka of Veera,

Celebrated by all Indras.

Kuber prepared Samawasharana,

at Baishakh Shukla Dashmi.

worshippers Gyan Kalyanak's
Get very happy life.

Om hreem Baishakh Shukla Dashmi Kewal Gyan Kalyanaka praptay Shri Mahavir Jinendray Arghyam....

Nirwan Kalyanaka of Veera,

Celebrated in Pawapur.

Mahavir received Siddhashila,

at Kartik Krishna Amawasya

Worshippers Moksha Kalyanaka
get very happy life.

Om hreem Kartik Krishna Amawashya Nirwan Kalyanaka praptay Shri Mahavir Jinendray Arghyam........

JAIMALA

Music– Kali teri choti hai.......

Veera is avatar of non-violence

Non violence his main preaching.

Never we will do any violence,
we are human.
Veera is the son of King Siddhartha,
And his mother's name is queen Trishla.
Last Teerthankar is the Lord Mahavir,
My God Mahavir.
Unmarried life Vardhaman liked,
And took Deeksha in year thirty,
Achieved Kewal Gyan then Mahavira,
Among of Samawasharana Prabhu Veera.
Worshipped Veera By Indra and human,
we are human.
Veera is presented today on Siddhashila.
He is destituted from eight karmas,
Who has worshipped Mahavira Swami,
Gain he good reputation and shining.
So I have come praying Mahavira,
Give me please ! Salvation O Veera!
"Chandnamati" is doing you Naman,We are human.

Om hreem Shree Mahavir Jinendray Jaymala Poornarghyam Nirvapamiti Swaha

Ityashrivadah–Pushpanjali

भगवान महावीर के समवसरण की प्रमुखगणिनी
महासती चन्दना आर्यिका माताजी की पूजन

रचयित्री- प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

स्थापना

शंभुछन्द- **तीर्थंकरप्रभु श्री महावीर का, जिनशासन महिमाशाली।**
उनके युग की गणिनी माता, चन्दना सती का यश भारी।।
उन सती चन्दना माता की, पूजा का थाल सजाया है।
उनकी गुण सुरभी पाने का, शुभ भाव हृदय में आया है।।
दोहा- **आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण विधान।**
करूँ चन्दना मात के, श्री चरणों में आन।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मातः ! अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक–

शंभु छन्द- **यमुना नदि का जल भर करके, माता के चरण पखारें हम।**
उन सम सहिष्णुता मिल जावे, बस यही भावना भाएं हम।।
श्रीवीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवन्दन है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुख गणिनी श्रीचन्दना आर्यिका मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकी शीतलता के समक्ष, चन्दन भी सचमुच शरमाया।
उन मात चरण के चर्चन को, चन्दन खुद है चढ़ने आया।

श्री वीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है
गणिनी माता चन्दनासती के, चरणों में अभिवंदन है।।२।।

ॐ ह्रीं महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिकामात्रे संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस अक्षयसुख के लिए चन्दना, ने दीक्षा स्वीकार लिया।
उसकी ही प्राप्ती हेतु सभी ने, अक्षत पुंज चढ़ाय दिया।।
श्री वीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनीमाता चन्दनासती के, चरणों में अभिवन्दन है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाली का उपवन जिनके, चरणों को सदा चूमता है।
इक नन्हा फूल उसी माता के, पद में आज घूमता है।।
श्री वीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दनासती के, चरणों में अभिवन्दन है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शील की रक्षा के खातिर, जिसने भोजन भी त्याग किया।
उन चरणों में क्षुधरोग विनाशन, हित नैवेद्य चढ़ाय दिया।।
श्री वीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दना सती के, चरणों में अभिवंदन है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बचपन से ही आलोक ज्ञान का, जिनके मन को भाया है।
उनके चरणों में मोह नाश, हेतू यह दीप जलाया है।

श्री वीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दनासती के चरणों में अभिवन्दन है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब राजसुखों में पली चन्दना, चन्दन गंध सहित काया।
उनकी पूजन में धूप चढ़ाने, से होगी सुरभित काया।।
श्री वीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दनासती के, चरणों में अभिवन्दन है।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे अष्टकर्मदनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल के भारों से झुके वृक्ष, माता के चरण नमन करते।
अविनश्वर फल की इच्छा से, फल थाल चरण में हम रखते।।
श्री वीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दनासती के, चरणों में अभिवन्दन है।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे बालब्रह्मचारिणी मात, जलफल सब तुम्हें समर्पित है।
''चन्दनामती'' का भक्ति अर्घ्य, चन्दनासती को अर्पित है।।
श्री वीर प्रभू के समवसरण की, प्रमुख मात को वन्दन है।
गणिनी माता चन्दनासती के, चरणों में अभिवन्दन है।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महावीर समवसरणस्य प्रमुख गणिनी श्री चन्दना आर्यिका मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके पावन पग धोने को, नदियों की धार तरसती हैं।
जिनके पग से संस्पर्शित जल, की बूंदें सदा महकती हैं।।

जिनकी महिमा में देवों ने, गंधोदक वर्षा कर डाली।
उन मात चन्दना के पद में, मैंने भी जलधारा डाली।।

शांतये शांतिधारा

फूलों पर पग रखने वाली ने, कांटों का पथ अपनाया।
इसलिए फूल पुष्पाजंलि बनकर, चरणों में चढ़ने आया।।
जिनकी महिमा में देवों ने भी, पुष्प बहुत बरसाये हैं।
उन मात चन्दना के पद में, मैंने भी पुष्प चढ़ाये हैं।।

दिव्य पुष्पांजलिः

जयमाला

तर्ज- कभी राम बनके.....

पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।

राजा चेटक की थीं सात कन्या।
सबसे छोटी थी उनमे से चंदना।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धाभक्ति लेकर, गणिनी माता जयवन्त होवें चन्दना।।१।।

हरा विद्याधर ने चन्दना को छल से।
लेकिन छूटी अपने ब्रह्मचर्य बल से।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।२।।

कौशाम्बी में घटी एक घटना।
जहाँ बेड़ियों में बांधी गयी चन्दना।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।३।।

पहुँचे कौशाम्बी में महावीर जब।
टूटी बेड़ियां दिया आहार तब।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनीमाता जयवन्त होवें चन्दना।।४।।

छोड़ा चन्दना ने घर परिवार भी।
दीक्षा आर्यिका की ले बनी गणिनी।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनी माता जयवन्त होवें चन्दना।।५।।

जब तक धरती पे है वीर शासन।
गणिनी चन्दना का नाम हो प्रकाशन।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनी माता जयवन्त होवें चन्दना।।६।।

गणिनी ज्ञानमती माता ने बताया।
उसी इतिहास को दरशाया।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर, श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनी माता जयवन्त होवें चन्दना।।७।।

देना आशीष ''चन्दनामती'' को।
गुणों का अंश कुछ देना मुझको।।
पूजूँ अर्घ्य लेकर श्रद्धा भक्ति लेकर, गणिनी माता जयवन्त होवें चन्दना।।८।।

दोहा- महासती गणिनी प्रमुख, मात चन्दना नाम।
अर्घ्य समर्पण कर उन्हें, नितप्रति करूँ प्रणाम।

ॐ ह्रीं महावीर समवसरणस्य प्रमुखगणिनी श्रीचन्दनाआर्यिका मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

शंभु छन्द-

गणिनी माता श्री ज्ञानमती की, शिष्या इक चन्दनामती।
महावीर के छब्बिस सौवें जन्मोत्सव पर पूजन रचना की।।
जो सती चन्दना गणिनी माता, की पूजा मन से करते।
वे महावीर के अनुयायी, चन्दन सम काया को लभते।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः

श्री महावीर स्तुति

रचयित्री : गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी

महावीर वीर सन्मति भगवन्! अतिवीर सदा मंगल करिये।
हे वर्धमान! भव वारिधि से, अब मुझको पार तुरत करिये।।
वह कुंडलपुर जग पूज्य हुआ, सिद्धार्थ दुलारे जन्मे थे।
प्रियकारिणी माँ की गोदी में, त्रिभवुन के गुरुवर खेले थे।।१।।

आषाढ़ सुदी छठ पूज्य हुई, जब गर्भ में प्रभु अवतार लिया।
माता त्रिशला की सेवा का, सुर ललनाओं ने भार लिया ।।
शुभ चैत्र सुदी तेरस का दिन, है धन्य धन्य वह सुखद घड़ी।
जब वर्द्धमान ने जन्म लिया, नभ से सुरपंक्ती उमड़ पड़ी।।२।

प्रभु शैशव में अजगर फण पर, चढ़कर संगम सुर जीता था।
नहिं ब्याह किया नहिं राज्य किया, जनता का मन भी फीका था।।
मगसिर वदि दशमी धन्य हुई, जब केशलोंच कीना तुमने।
तप तपते बारह वर्षों तक, प्रभु मौन विहार किया तुमने।।३।।

कौशाम्बी में चन्दनबाला, सिरमुण्डित जकड़ी बेड़ी में।
प्रभु दर्शन से बेड़ियाँ झड़ीं, तनु सुन्दर हुआ एकक्षण में।।
कोदों भोजन हो गया खीर, प्रभु को आहार दे धन्य हुईं।
यह महिमा तीर्थंकर प्रभु की, पंचाश्चर्यों की वृष्टि हुई।।४।।

अतिमुक्तक वन में ध्यान लीन थे, भव ने आ उपसर्ग किया।
तब अचलित प्रभु को देख स्वयं, भार्या सहपूजा भक्ति किया।।

बैशाखशुदी दशमी तिथि में, केवल रवि किरणें प्रकट हुईं।
शुभ समवसरण था रचा हुआ, दिव्यध्वनि फिर भी खिरी नहीं।।६।।

श्रावण श्यामा एकम उत्तम, गौतम गणधर जब आए हैं।
विपुलाचल पर ध्वनि प्रकट हुई, मुनिगण सुर नर हर्षाए हैं।।
हे वीर प्रभो! तव शासन में, मुझको रत्नत्रय निधी मिली।
मैं भक्ति सहित प्रणमूँ तुमको, मेरी मन कलियाँ आज खिलीं।।७।।

तनु सात हाथ कांचन कांति, आयू बहत्तर वर्ष कही।
है चिन्ह मृगेन्द्र प्रभो! तेरा, जो ध्यावे पावे मोक्ष मही।
कार्तिक वदि चौदस रात्रि अंत, आमावस का प्रत्यूष कहा।
सब कर्म नाश प्रभु मोक्ष गए, स्वात्मोत्थ सहज आनंद लहा।।८।।

पावापुरि के उपवन में जो, सरवर है कमल खिले उसमें।
प्रभु के निर्वाण कल्याणक से ,अब तक भी कमल खिले सच में।।
देवों ने आकर पूजा की, महावीर प्रभू त्रिभुवन पति की।
अंधियारी में दीपक ज्वाले, तब से ही दीपावली हुई।।९।।

हे वीर प्रभो! मंगलमय तुम, लोकोत्तम शरणभूत तुम ही।
भव भव के संचित पाप पुंज, इक क्षण में नष्ट करो सब ही।।।
मैं बारम्बार नमूँ तुमको, भगवन्! मेरे भव त्रास हरो।
''सज्ज्ञानमती'' सिद्धी देकर, स्वामिन्! अब मुझे कृतार्थ करो।।१०।।

भगवान महावीर का बारहमासा

रचयित्री : प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज µ रामजी की निकली सवार

महावीर का बारहमासा, सुनें हम मन में ले के आशा-आशा।
एक ओर राग था, एक ओर वैराग, वैराग्य से जीवन को प्रकाशा।
महावीर का बारहमासा।। टेक.।।

मधुमास बन गये सब मास जिनके।
मन में हुआ जब वैराग्य प्रभु के।।
कुण्डलपुरी की धरती है पावन।
जनमें जहाँ पर महावीर भगवन।।
बन ब्रह्मचारी, दीक्षा स्वीकारी,
निज ज्ञान से जिनने जग को प्रकाशा। महावीर का बारहमासा।।१।।

शुभ चैत्र में जन्मे, महावीर स्वामी।
अक्षय बना वह, मासों का स्वामी।।
होली का रंग चढ़ा वीरा के तन पर।
भाई थी भावना, जब सोलहकारण।।
माँ त्रिशला नेए देखे सोलह सपने,
सिद्धार्थ पितु ने फल को विकासा। महावीर का बारहमासों।।२।।

बैशाख में बने कैवल्यज्ञानी।
गणधर मिले बिन थे मौन ध्यानी।।
बैशाख को ज्ञान का मास मानो।
महावीर की गुण गाथा बखानो।।

जिनवर चलें अधर, पगतल थे स्वर्ण कमल,
समवसरण नभ में अद्भुत बना था। महावीर का बारहमासा।।३।।

शुभ ज्येष्ठ का मास अति उष्ण माना।
महावीर ने तप करने को ठाना।।
निज तप से कितने पतितों को तारा।
यह मास तप के लिए समझो प्यारा।।
सबसे बड़ा मास, मासों में यह खास,
वीरा ने इसको निज में प्रकाशा। महावीर का बारहमासा।।४।।

आषाढ़ में आष्टान्हिक परब है।
निज ध्यान में निश्चल वीर प्रभु हैं।।
माँ त्रिशला के सपनों का मास है यह।
सिद्धार्थ ने जिनका फल था बताया।।
चौमास का मास, जग में है विख्यात,
लेकिन जिनेन्द्र प्रभु करते न हीं चौमासा। महावीर का बारहमासा।।५।।

श्रावण की एकम दिन वीर शासन,
दिव्यध्वनी झेलने आए गौतम।।
युग का प्रथम मास वह माना जाता।
महावीर का जुड़ गया उससे नाता।।
छ्यासठ दिनों बाद, ओंकार का नाद,
गूंजा तभी हुआ श्रुत का विकासा। महावीर का बारहमासा।।६।।
पर्वों का महिना है भाद्रपद का।
महावीर ने पर्व का फल चखा था।।
इस मास में व्रत तप करते हैं सब।
महावीर वाणी सुनते हैं सुर नर।।

सोलह सुकारण, दशधर्म लक्षण,
उत्तम क्षमावाणी पर्व आता। महावीर का बारहमासा।।७।।

आश्विन शरद ऋतु प्रारंभ करता।
यह मास शारद का पक्ष धरता।।
महावीर की दिव्यध्वनि खिरती रहती।
भव्यों के मन को पावन वो करती।।
जिनवर की वाणी, है कल्याणी,
सुनकर सभी ने निज को प्रकाशा। महावीर का बारहमासा।।८।।

कार्तिक अमावस निर्वाण तिथि है।
प्रभु वीर निर्वाण थल पावापुरि है।।
निर्वाणलाडू चढ़ा उस दिवस पर।
तब से चला वीर निर्वाण संवत्।।
दीवाली उत्सव, है वह महोत्सव,
देवों ने धरती पे जिसको प्रकाशा। महावीर का बारहमासा।।९।।

मगशिर वदी दशमी दीक्षा तिथि है।
प्रभु ने बताई जब तप की विधि है।।
तप लीन वीरा की भक्ति करें हम।
तप करने की कुछ शक्ती लहें हम।।
जा ज्ञातृवन में, कुछ सोचा मन में,
वीरा ने तप से निज को प्रकाशा। महावीर का बारहमासा।।१०।।
सर्दी भयंकर थी पौष में जब।
महावीर की काया तब भी निश्चल।
तपवृद्धि से नाम सार्थक किया है।
श्री वीर अतिवीर का पद लिया है।।

लेना हो शक्ती, तो कर लो भक्ती,
प्रभु ने सभी कर्म तप से विनाशा। महावीर का बारहमासा।।११।।

आया बसन्तोत्सव माघ महिना।
प्रभु ने बसन्ती तप वस्त्र पहना।।
मनपर्ययी ज्ञान था उनका गहना।
थे मौन फिर भी उनका था कहना।।
नहिं भोग में सुख, है योग में सुख,
अतएव सबने उसको ही साधा। महावीर बारहमासा।।१२।।

फाल्गुन में आष्टान्हिक पर्व आता।
महावीर प्रभु से इसका भी नाता।।
इस मास में भी की थी तपस्या।
फिर ज्ञान के बाद त्रैलोक्य देखा।।
बारह महीने, यूँ देखे प्रभु ने,
हो गयी देखो सफल वीर गाथा। महावीर का बारहमासा।।१३।।

पच्चिस सौ सत्ताइस वीर संवत।
तिथि आई श्रावण शुक्ला इकादशि।।
आता इसी मास में रक्षा बन्धन।
यह "चन्दनामति" महावीर वन्दन।।
छब्बीस सौवाँ, प्रभु जन्म उत्सव,
भक्ती में रचा वीर का बारहमासा। महावीर का बारहमासा।।१४।।

भजन

रचयित्री : प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-तीरथ करलो पुण्य कमालो.......

चलो कुण्डलपुर चलना है, वीर को वन्दन करना है।
महावीर की जन्मभूमि में, उत्सव करना है।। चलो.।।
तीर्थ विकास का प्रथमचरण, कीर्तिस्तम्भ की रचना।
महावीर की सात हाथ, अवगाहन की प्रतिमा।।
वहाँ स्थापित करना है,
जन्मभूमि कुण्डलपुर को, अब फिर से सजना है। चलो--।।१।।
नंद्यावर्त महल प्रभु का, हम फिर से बनाएंगे।
जहाँ वीर खेले थे कभी, वह दृश्य दिखाएंगे।।
तीर्थ को विकसित करना है,
वहीं झुलाओ सब मिल जाकर, प्रभु का पलना है। चलो-।।२।।
ज्ञानमती माता जी की, प्रेरणा मिली सबको।
महावीर की जन्मभूमि अब, जल्दी विकसित हो।।
हमें सहयोगी बनना है,
यही ''चन्दनामती '' सभी, भक्तों से कहना है। चलो-।।३।।

भजन

रचयित्री : प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-कभी प्यासे को पानी......

वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं,
जन्मउत्सव मनाना सफल क्या रहा?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं,
तो महोत्सव मनाने का फल क्या रहा?-टेक.।।
हमने इतिहासकारों की बातें सुनीं,
आधुनिक बातें सुन एक चिन्तन जगा।
शास्त्र की सच्ची बातें बताई नहीं,
उनको ही दोष देने का फल क्या रहा?।।
वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं,
जन्मउत्सव मनाना सफल क्या रहा?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं........।।१।।
हमने कुण्डलपुरी की परिस्थिति सुनी,
उससे अन्तर्हृदय मानो रोने लगा।
वहाँ हमने जयंती मनाई नहीं,
उनकी जयकार करने का फल क्या रहा?
वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं,
जन्मउत्सव मनाना सफल क्या रहा?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं.......।।२।।
दो चरण ज्ञानमति जी के जब चल पड़े,
कोटि पग फिर तो उस ओर ही चल पड़े।
''चन्दना'' अब बजी है बधाई वहीं,
जन्म उत्सव मनाना सफल हो गया।।
वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं।
जन्मउत्सव मनाना सफल क्या रहा?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं.........।।३।।

भजन

रचयित्री : प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-सज धज कर.....

तेरी चंदन सी रज में, हम उपवन खिलाएंगे।
कुंडलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाएंगे।।
जन्मे जहां खेले जहां, त्रिशला माँ के नन्दन।
उस कुंडलपुर की माटी का, सचमुच कण-कण चन्दन।।
चन्दन सी उस माटी को हम, सिर पर लगाएंगे।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाएंगे।।१।।
सोने का नंद्यावर्त महल, सिद्धारथ जी का था।
मणियों के पलंग पर त्रिशला ने, सपनों को देखा था।।
उन सपनों को सच्चे करके, फिर से दिखलाएंगे।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाएंगे।।२।।
प्राचीन इक मंदिर प्रभू का, कुण्डलपुर में है।
नालन्दा के नजदीक "चन्दना", दर्शन मिलते हैं।।
भावना सभी भक्तों की हम, प्रभु तक पहुचाएंगे।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाएंगे।।३।।

****

BARAH BHAVNA [TWELVE ANUPREKSHAS]

Written by: Aryika Chandnamati

(**Tune- Chalat Musafir Moh liyo Re**......)

I'm praying to you Jinavar deva!
I'm praying to you
Praying to you, I'm saying to you-2
I'm praying to you Jinvar deva. I'm....
I did not know about my soul,
I could not think about myself.
So tell me that path deva.......
I'm praying to you........

1. Anitya Bhavna

All things are momentary in world,
Everybody doing the birth and death.
It is also nature of Universe......
I'm praying to you.........1

2. Asharan Bhavna

Unprotected are the souls of creatures
fruitition of Karmas they are feeling.
Any body don't help here.......
I'm praying to you.........2

3. Sansar Bhavna

Soul moves in Universe from eternal,
And could not attain true happiness.
Now I want to end the sorrow
I'm praying to you........3

4. Ekatva Bhavna

I came alone and will go alone too,
There is neither friend nor enemy.
None takes my Manifold sufferings......
I'm praping to you.....4

5. Anyatva Bhavna

Soul is separate from my body,
All relatives are different from me,
I think, my soul is as God.....
I'm praying to you....5

6. Ashuchi Bhavna

Although my soul is so sacred,
But He became impure by Karmas.
Please bless me receive pure soul...
I'm praying to you.....6

7. Ashrav Bhavna

The inflow of Karmas grows my Universe,
And it also originates the Passions.
Good-bad, two kinds of Ashravas...
I'm praying to you....7

8. Samvar Bhavna

The inflow of Karmas stopped where,
That condition is known by Samvar.
I want to attain only this manner.....
I'm praying to you....8

9. Nirjara Bhavna

After the fruitition of those Karmas,
Dissociation of them takes place.
Two kinds of this Nirjara.....
I'm praying to you....9

10. Lok Bhavna

Structure of Universe, is from eternal,
It is the nature of whole Universe.
Necessary is understanding of this........
I'm praying to you...10

11. Bodhidurlabha Bhavna

Human life is the best of all lives,
But difficult is, to attain Ratnatraya.
Give me that Right Path, deva......
I'm praying to you....11

12. Dharma Bhavna

Religion is the nature of thing, say Granthas,
I want to receive nature of the soul.
Then, will get real Liberation........
I'm praying to you...12
These are called as twelve Anupreksha,
Meditated by all great persons.
"Chandna" wants to get them also......
I'm praying to you..

****

आरती

- रचयित्री : प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज - तन डोले.......

जय वीर प्रभो, महावीर प्रभो की, मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।टेक.।।

सुदी छट्‌ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महीने तक कुबेर ने, बहुत रतन बरसाए ।। प्रभूजी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हरषी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।१।।

धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहाँ प्रभू लीना ।
चैत्र सुदी तेरस के दिन, वहाँ इन्द्र महोत्सव कीना ।। प्रभू जी.।।
काश्यप कुल के, भूषण तुम थे, बस एकमात्र अवतार थे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।२।।

यौवन में दीक्षा धारण कर, राज-पाट सब त्यागा ।
मगशिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा ।। प्रभू जी. ।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।३।।

शुक्ल दशमि वैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था ।। प्रभू जी.।।
तब दिव्यध्वनि, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।४।।

पावापुरी सरवर में जाकर, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था ।। प्रभू जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।५।।

वर्द्धमान, सन्मति, अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो ।। प्रभू जी.।।
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।६।।

आरती श्री महावीर स्वामी की

जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो।।
ॐ जय महावीर प्रभो।।

सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी।
बाल ब्रह्मचारी व्रत पाल्यौ तपधारी।। १।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी।। २।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

जग में पाठ अहिंसा, आपहि विस्तार्यो।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचार्यो।। ३।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

इह विधि चाँदनपुर में, अतिशय दरशायौ।
ग्वाल मनोरथ पूरयो, दूध गाय पायौ।। ४।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

प्राणदान मंत्री को, तुमने प्रभु दीना।
मन्दिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना।। ५।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी।। ६।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवै।
होय मनोरथ पूरण, संकट मिट जावै।। ७।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

निशि दिन प्रभु मंदिर में, जगमग ज्योति जरै।
हरि प्रसाद चरणों में, आनन्द मोद भरै।। ८।।
ॐ जय महावीर प्रभो।